सुरक्षा चौहान

दिल्ली

असली सरस्वती पूजा

वसंत की सुबह थी। कॉलेज परिसर पीले रंग में डूबा हुआ था। छात्र-छात्राएँ पीले वस्त्रों में, आँखों में भविष्य के गुलाबी सपने लिए वसंत पंचमी के उत्सव की तैयारी में लगे थे।

प्रिंसिपल प्रोफेसर शारदा हवन और प्रसाद वितरण की व्यवस्था देख रही थीं। मुख्य द्वार पर खड़ी होकर वे सजावट में लगे मजदूरों को निर्देश दे रही थीं।

कॉलेज से सटी कच्ची बस्ती के बच्चे हलवाइयों के टेंट के बाहर मधुमक्खियों की तरह मंडरा रहे थे। उन्हीं में एक छोटी बच्ची भी थी—जो रोज़ बालों की क्लिप और रबर बेचा करती थी। आज उसके हाथ में माँ सरस्वती की तस्वीरें, सरसों के पीले फूल थे

वह एक छात्रा का हाथ पकड़कर बोली—

“ले लो दीदी, माता का आशीर्वाद मिलेगा। खूब विद्या आएगी, खूब तरक्की करोगी।”

पीली साड़ी पहने वह छात्रा रुक गई। उसने मुस्कुराकर कहा—

“तुम भी स्कूल जाया करो। तब तुम्हें भी विद्या मिलेगी।”

“हमें स्कूल में नहीं लेते दीदी। हमारे कागज़ नहीं हैं। हमें विद्या नहीं आ सकती।”

फिर उसने फूल आगे बढ़ाते हुए कहा—

“बीस रुपये में ले लो। बहुत भूख लगी है।”

यह दृश्य पास खड़ी प्रोफेसर शारदा देख रही थीं। उन्होंने गहरी साँस ली। मन ही मन सोचा—

“विद्या क्यों नहीं आ सकती? विद्या तो किसी की बपौती नहीं। माँ सरस्वती तो सबकी हैं।”

“अगर इन बच्चों को पढ़ने का अवसर नहीं मिला, तो हमारी सारी पूजा व्यर्थ है। शायद इन्हें स्कूल भेज पाना ही मेरी असली सरस्वती पूजा होगी।”